Inspira- Journal of Modern Management & Entrepreneurship (JMME)
ISSN : 2231–167X, Impact Factor: 5.647, Volume 10, No. 03, July, 2020, pp. 269-274

भारतीय संस्कृति के परिवर्तन में भक्ति आन्दोलन का महत्व

डॉ. सीमा शर्मा*

Lkkj

आठवीं सदी से 12वीं सदी तक का काल पूरे विश्व में ही बौद्धिक चेतना का काल माना गया है। धार्मिक क्षेत्र में पर्याप्त चिन्तन व मनन चल रहा था। इस्लाम का तो उद्भव ही सातवीं सदी में हुआ था। अत : इस्लाम विचारक अपने धार्मिक सिद्धान्तों को स्थिर व लोकप्रिय बनाने का प्रयास कर रहे थे। इसी प्रकार यूरोप के ईसाई अन्धकार के युग से निकल कर प्रकाश की और उन्मुख हो रहे थे । देवालयों के धराशायी होने व देव मुर्तियों के खण्डित होने पर हिन्दु भी अध्यात्मिक बन कर अपने धर्म की रक्षा में रत थे। जब मन्दिर संकटग्रस्त हो गये तो हिन्दु जंगलों में जाकर अपने इष्ट देव की आराधना करने लगे। विचारों का विभाजन अवश्य हो गया। कुछ भक्त–जन भगवान को साकार रूप (सगुण) में मानने लगे तो कुछ निराकार (निर्गुण) के रूप में। परन्तु दोनों विचारधाराऐं हिन्दुओं को भगवत भवन की और उन्मुख करने में सहायक सिद्व हुई और हिन्दु भगवत धर्म द्वारा प्रतिपादित भक्ति के मार्ग पर निरन्तर अग्रसर होते रहे व अपनी भक्ति भावना से अपने धर्म और संस्कृति की रक्षा करते रहे। भागवत धर्म भारत में मुसलमानों के आने से पूर्व ही प्रारम्भ हो चुका था। मुसलमानों का स्थायी प्रभाव 13वीं सदी से पडना प्रारम्भ हुआ जबकि भक्ति आन्दोलन,जिसका प्रारम्भ दक्षिण में आलवार सन्तों द्वारा हुआ था,का आरम्भ नवीं सदी में ही हो गया था। उत्तरी भारत में तो यह दक्षिण से आया था। प्रमाण स्वरूप हम भागवत और पुराण के निम्न श्लोक को ले सकते हैं–

mRi UUkk nkfoMs pkga d.kkVs of}ekxrkA
fLFkrk fdafpUegkjk'Vs xqtjs th.kZrk xrkAA

अर्थ है – भक्ति कहती है कि मैं द्रविड़.देश में जन्मी,कर्णाटक में मैंनें विकास पाया,महाराष्ट्र में कुछ दिन ठहरी और गुजरात जाकर वृद्व हुई। पुराणों की रचना आठवीं –नवीं सदी में मानी जाती है। वस्तुतः स्पष्ट है कि भक्ति आन्दोलन भारत में मुसलमानों के आने से पूर्व ही प्रारम्भ हो गया था।

'kCnkoyh% *–भक्ति, देवालयों, संस्कृति, सार्वभौम मानवता, आध्यात्मिक धर्मचर। धर्मेण सुखमासीत।।*

---

i{Lrkouk

समय तथा परिस्थितियों का प्रभाव धर्म पर पड़ता है जिसके परिणामस्वरूप धार्मिक मान्यताओं में बदलाव आता है और उस बदलाव से ईश्वर–भक्ति, उसकी उपासना व अर्चना में भी बदलाव आ जाता है। परन्तु बदलाव का अर्थ यह नहीं कि हम ईश्वर के अस्तित्व को चुनौति दे रहे हैं। महावीर स्वामी व महात्मा बुद्ध

* असिस्टेंट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, सनतान धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर, राजस्थान।

ने अपना करिश्मा दिखाकर वैदिक धर्म के अस्तित्व को चुनौति दी तो स्वामी शंकराचार्य ने भारत में प्रसारित जैन धर्म व बौद्व धर्म की चुनौति को स्वीकार किया। इन चुनौतियों के परिणामस्वरूप कोई धर्म नष्ट नहीं हुआ। ईश्वर के प्रति उत्पन्न श्रद्वा में इसके विपरित बढोतरी हुई और यह बढोतरी एक आन्दोलन के स्वरूप हुई जो हमारे मध्यकालीन इतिहास में HkfDr vkUnkyu के नाम से जाना जाता है।

HkfDr vkUnkyu ij efLye izHkko \

कई विद्वानों की धारणा है कि भक्ति आन्दोलन मुस्लिम आक्रमणों की देन है और अपनी धारणा के समर्थन में वे निम्न तर्क प्रस्तुत करते हैं –

- भक्ति आन्दोलन का आधार रामानन्द ने तैयार किया था और उन पर इस्लामी विचारों का प्रभाव अवश्य पड़ा था। तेहरवीं सदी में मुस्लिमों के अत्याचारों से बचने तथा उनकी धार्मिक कट्टरता में उदारता लाने की दृष्टि से रामानन्द ने हिन्दु धर्म व समाज में उदारता का समावेश किया। परन्तु इस उदारता का कट्टर मुसलमानों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंनें हिन्दुओं को बलात मुसलमान बनाने व देव मन्दिरों को धराशायी करने का क्रम जारी रखा। हिन्दुओं का धर्म व जीवन पर दिन पर दिन संकट–ग्रस्त होता जा रहा था। इन परिस्थितियों में हिन्दुओं के निराश दिलों में आशा का संचार प्रकट करने तथा मुसलमानों के अत्याचारों से हिन्दु धर्म को बचाने की दृष्टि से रामानन्द ने सर्व–धर्म–समन्वय का आन्दोलन चलाया और सारे देश में भ्रमण कर उसे देश व्यापी बनाने का प्रयास किया।
- इस्लाम धर्म के एकेश्वरवाद ने हिन्दुओं को एक परम शक्ति पर चिन्तन करने को बाध्य कर दिया तथा इस्लाम की नास्तिकता ने भक्ति आन्दोलन में निर्गुण भक्ति का समावेश भी किया।
- तीसरा तर्क यह प्रस्तुत किया जाता है कि मुसलमानों ने अपनी धार्मिक कट्टरता से भारत में परिस्थितियॉ ऐसी उत्पन्न कर दीं कि हिन्दुओं ने भक्ति के माध्यम से अपने इष्ट देव को प्रसन्न करते हुए अत्याचारों से राहत पाने का प्रयास किया।

उपर्युक्त तथ्य इस तथ्य को तो प्रमाणित नहीं कर पाते कि भक्ति आन्दोलन का सूत्रपात मुसलमानों के आने से ही हुआ– पर उनके उपर्युक्त तर्कों से यह अवश्य स्पष्ट होता है कि इस आन्दोलन पर इस्लाम धर्म की छाप अवश्य पड़ गई थी।

HkfDr vkUnkyu dk dkj.k

भक्ति आन्दोलन धार्मिक क्षेत्र में एक महान् आन्दोलन था जो सदीयों तक भारत में चलता रहा। इस आन्दोलन के फलस्वरूप हिन्दु धर्म में सुधार ही नहीं हुए अपितु इसने कई महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तन भी किये। इस आन्दोलन ने भारतीय साहित्य क्षेत्र को भी अप्रभावित नहीं रखा। इस क्रान्तिकारी महाआन्दोलन के पीछे कारण भी महत्वपूर्ण होने चाहिए। उनमें से कुछ कारण यहॉ उल्लेखित हैं–

- ckgE.kokn dk oy ,d ckf}d fl}kUr gkuk& वैदिक धर्म सिद्वान्तों पर अधिक अवलम्बित था इसके प्रतिपादक व चिन्तक ब्राहम्णों ने इसे व्यावहारिक न बना कर अधिक सिद्वान्तवादी बना दिया था। सिद्वान्तवादी होने के कारण इसकी शिक्षाऐं अवैक्तिक तथा काल्पनिक बन गई थीं। वे सामान्य लोंगों की समझ के बाहर थीं। इस कारण वे उन पर सुगमता से आचरण भी नहीं कर पाते थे। अतः हमारे धर्म सुधारकों ने अपने धर्म की इन बुराईयों के निवारणार्थ यह भक्ति आन्दोलन चलाया। आन्दोलन मोक्ष प्राप्ति का एक मात्र साधन बताया गया और यह साधन ब्राहम्णों के व्यर्थ के क्रिया–काण्डों से मुक्त एवं ईश्वर भक्ति का सुलभ साधन था। अत : आम लोंगों ने इस पर सुगमता से आचरण करना आरम्भ कर दिया था।

- e|fLye vkdze.k& जब मुसलमानों ने देवालयों को धराशायी कर देव प्रतिमाओं को खण्डित करना आरम्भ किया तो हिन्दुओं की बहुदेववादी प्राचीन धर्म के प्रति आस्था डगमगाने लगी। वे निराशा के सागर में निमग्न हो गए। अतः साधु–सन्तों ने निराश हिन्दुओं के हृदय में भगवान के प्रति प्रेम व आस्था पुनः उत्पन्न करने के लिए भक्ति मार्ग जैसा सरल सिद्वान्त प्रस्तुत किया। उनके मतानुसार ईश्वर की भक्ति कभी भी की जा सकती है।
- fgUn| lekt dh o.kZ O;oLFkk& मुसलमानों के भारत में प्रवेश के समय हिन्दु समाज मे जाति व्यवस्था ने जटिल रूप धारण कर लिया था। इस व्यवस्था में शुद्रों को कोई स्थान प्राप्त नहीं था। वेदों का पठन–पाठन और वेदिक धर्म का अनुशीलन उनके लिए वर्जित था। अतः उनमें असन्तोष व्याप्त था। परन्तु इस नवीन धार्मिक आन्दोलन ने सबके लिए धर्म का मार्ग खोल दिया।
- bZlkbZ /keZ dk iHkko& कई पाश्चात्य विद्वानों की धारणा है कि भक्ति आध्यात्मिक लक्ष्य–मोक्ष के साधन व उसके लिए एक शर्त के रूप में एक विदेशी विचार था जो भारत में ईसाई धर्म के साथ आया और जिसने पुराणों और महाकाव्ययुगीन हिन्दु धर्म पर गहरा प्रभाव डाला। परन्तु यह मत ठीक नहीं माना जाता। युसुफ हुसेन,बार्थ व सेनार्ट (Senart) इस मत से असहमत हैं। सेनार्ट इसका विरोध करते हुए लिखते हैं कि ÞHkkjr esa fuf'Pkr :Ik ls HkfDr dh tM+s cgqr xgjh gSAß
- bLyke /keZ dk iHkko& कुछ विद्वान इस आन्दोलन का जन्म इस्लाम के प्रभाव के परिणामस्वरूप बताते हैं। उनमें डॉ. ताराचन्द व प्रो. हुमॉयू कबीर प्रमुख हैं। डॉ. आर.सी.मजूमदार की धारणा है कि ßbLyke dh iztkrkf=d vkSj mnkj Hkkoukvksa us bl vkUnksyu dks fo'k"k :Ik ls iHkkfor fd;kA Þऐसा लगता है कि इस्लाम के भारत प्रवेश से भक्ति आन्दोलन ने व्यापक रूप अवश्य धारण किया। दिनकर जो लिखते हैं–Þd|N rks bLyke dk /kDdk [kkus ls ?kcjkdj vkSj d|N lQh;ksa ds iHkko esa vkdj fgUn|Ro txk vkSj tkxdj viuks :Ik dks l|/kkjus yxkAß
- fgUn| /keZ esa l|/kkjdksa dk vkfoHkkZo& जैन धर्म और बौद्व धर्म के प्रसार से जब वैदिक धर्म का ह्रास होने लगा तो स्वामी शंकराचार्य धर्म की रक्षार्थ अवतरित हुए। परन्तु जब उनके अद्वैतवादी विचारों से हिन्दुओं को अधिक राहत नहीं मिली और इसके विपरित मुसलमानों के अत्याचार और उग्र हो गये तो हिन्दु धर्म की रक्षार्थ दक्षिण में आलवार सन्त आगे आये। उन्होने जगह जगह घूम कर ईश्वर भक्ति का प्रसार किया तथा रामानुजाचार्य शंकर के अद्वैतवाद में कुछ संशोधन करके ßfof'k'Bkösrokn Þका प्रचार किया। इससे हिन्दुओं का दृष्टिकोण और उदार तथा समन्वयात्मक बना। परिणामतः वे मुसलमानों के प्रति कट्टर नहीं रहे और अपने धर्म के रक्षार्थ अपने धर्म की बुराईयों को दूर करते हुए इस्लाम धर्म के उदार सिद्वान्तों को अपनाने लगे। दक्षिण में आन्दोलन के प्रबल हो tkus ij jkekuUn bl vkUnksyu dks mŸkj esa ys vk;sA fQj ls;kxo'k fgUn| /keZ esa /keZ l|/kkjdksa की झड़ी लग गई। भारत की आज की सी दशा नहीं रही। उन धर्म सुधारकों ने निराशा के सागर में निमग्न तथा परमात्मा से विरक्त हुए हिन्दुओं को भक्ति का नवीन मार्ग दर्शाया।

HkfDr vkUnksyu dk egRo

भक्ति आन्दोलन के उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट है कि इसने दक्षिणी भारत से उत्तरी भारत में फैलकर लोक–जीवन को नया मोड़ दिया। इसकी महान देन सार्वभौम मानवता के आधार पर लोक धर्म और संस्कृति के समस्त सूत्रों को एकत्र करना था। इसके प्रवर्तकों ने जॉति–पॉति और वर्ग वैशिष्टय के भेदभाव को समाप्त कर सब मनुष्यों को समान घोषित किया। रामानन्द का निम्न सूत्र उल्लेखनीय है–

tkfr&ikfr tkus ugha dksbZA

gfj dks Hkts lks gfj dk gksbZAA

यह सूत्र भक्ति आन्दोलन के प्रवर्तकों का आम सिद्वान्त बन गया था। इस मानवतावाद के साथ उन्होने व्यक्तिवाद को भी लिया। उनकी धारणा थी कि प्रत्येक मानव का भगवान से सीधा सम्पर्क है। इस परम–पिता परमात्मा की खोज में उसे गुरू से सहायता लेनी चाहिए। किन्तु असली गुरू तो स्वयं भगवान ही हैं। इस खोज के लिए उसे मार्ग ढूंढने का अधिकार है, लेकिन सबसे सहज,सीधा और सच्चा रास्ता सदाचार और मन का संयम है। भक्ति आन्दोलन ने तत्कालीन भारतीय समाज के निम्न पहलूओं पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाला।

- /ke d {k= e & इस आन्दोलन से पूर्व हिन्दू मुसलमानों के धार्मिक अत्याचारों से उत्पीड़ित हो रहे थे। परन्तु भक्ति–आन्दोलन रूपी विशाल एवं सघन वृक्ष ने उन दग्ध हिन्दुओं को शीतल छाया प्रदान की। भक्ति–आन्दोलन ने दोनों सम्प्रदायों में धार्मिक सहिष्णुता का प्रादुर्भाव किया। अपनी धार्मिक कट्टरता का परित्याग कर हिन्दू व मुसलमान दोनों एक–दूसरे के समीप आए। उनमें सामंजस्य की भावना उत्पन्न हुई। इस आन्दोलन के प्रभाव से धार्मिक मिथ्याडम्बरों पर कुठराघात हुआ। इस जागरण से भारत में कई धार्मिक सम्प्रदाय उत्पन्न हो गए जैसे– सिक्ख सम्प्रदाय, कबीर पन्थ, दादू पन्थ आदि।भगवान की प्राप्ति के लिए भक्ति मार्ग अपनाया गया और भक्ति में भी दो धाराऐं उत्पन्न हो गई– (1) सगुण भक्ति (2) निर्गुण भक्ति।
- Lkekt d {k= e – भक्ति–आन्दोलन से हमारा सामाजिक जीवन भी प्रभावित हुआ। इस आन्दोलन ने जाति प्रथा की जटिलता और ऊॅच–नींच की भावना पर भारी आघात किया। इन संतों के उपदेशों की शीतल छाया में सभी वर्गों के मनुष्य बिना किसी भेदभाव के एकत्रित होने लगे। संतों ने निम्न वर्ग के लोगों के लिए भी मुक्ति का मार्ग खोल दिया। स्वामी शंकराचार्य से लेकर चैतन्य महाप्रभु तक यदि हम भक्ति आन्दोलन की प्रगति पर दृष्टि डालते हैं तो यह दृष्टिगत होता है कि सभी भक्त संतों ने सामाजिक समानता व दलित लोंगों को समाज में सम्मान दिलाने का प्रयास किया। इसका श्रेय स्वामी शंकराचार्य व चैतन्य को विशेष रूप से दिया जाता है।
- jktuhfrd {k= e & भक्ति आन्दोलन से भारतीय समाज व धर्म ही प्रभावित नहीं हुए वरन् इसने भारत की तात्कालीन राजनीति में भी जागृति उत्पन्न की। हिन्दुओं को अपनी दयनीय अवस्था का ज्ञान हुआ। उन्होंनें अपनी नागरिकता के अधिकार–प्राप्ति के लिए संगठित होना आरंभ किया। राजकीय पदों की प्राप्ति के लिए तुर्की सुल्तानों की चाटुकारिता करने के स्थान पर हिन्दु संगठित होने लगे। अपनी शक्ति का आभास कर वे भी अपने राज्य स्थापित करने लगे। दक्षिण भारत में विजयनगर राज्य की स्थापना इसी का परिणाम था।
- lkfgR; d {k= e – भक्ति आन्दोलन ने हिन्दी साहित्य के कलेवर को सुविकसित किया। इस आन्दोलन के संत महात्माओं ने अपनी साहित्यिक रचनाओं से हिन्दी साहित्य तथा अन्य प्रान्तीय भाषाओं को विकासोन्मुख किया। वल्लभाचार्य तथा उनके शिष्यों ने हिन्दी में रचनायें की। सूरदास ने बृजभाषा को अपनी ओजपूर्ण रचनाओं से पल्लवित किया तथा तुलसीदास ने अवधी भाषा को। गुरू नानक के भजनों में हिन्दी, फारसी आदि भाषाओं ने तो स्थान पाया हो पर साथ में सिक्खों की गुरूमुखी भाषा का भी आविर्भाव हुआ और इससे पंजाबी भाषा विकसित हुई। नामदेव, ज्ञानदेव व संत तुकाराम ने मराठी भाषा को विकसित किया। बंगला को विकसित बनाने में चंडीदास व चैतन्य महाप्रभु के नाम अति उल्लेखनीय हैं। संत कबीर की रचनाओं में भारत की विभिन्न भाषाओं का समन्वय हुआ। इस प्रकार भक्ति–आन्दोलन से भारत में भक्ति का प्रसार तो हुआ ही पर साथ में भारत की विभिन्न भाषाऐं भी विकसित हुई। इनमें सर्वाधिक विकास हिन्दी भाषा का हुआ और उसका प्रभुत्व उस समय प्रायः समस्त भारत पर स्थापित हो गया।

fu"d"k

मध्ययुगीन सन्तों की भक्ति – आन्दोलन के सन्दर्भ में जो भुमिका रही उस पर हमनें हर पहलू से प्रकाश डालने का प्रयास किया है और इस विवरण से स्पष्ट होता है कि धार्मिक और सामाजिक द्वोत्र में उनकी सेवाऐं महत्वपूर्ण रहीं। संक्षेप हम कह सकते हैं कि उन्होनें इस भक्ति आन्दोलन के प्रवर्तन से भारत की समाज में एक नवीन चेतना के साथ नवीन युग का सूत्रपात किया। भारत में आततार्इयों के रूप में मुसलमानों के आगमन तथा तुर्की नवीन साम्राज्य की स्थापना से हिन्दु समाज में जो निराशा व अचेतना का समावेश हो गया था उसके निवारण के लिए उसमें नवीन आशा, नव स्फूर्ति का सजृन करना आवश्यक था। इन सन्तों ने अपने भक्ति पूर्ण विचारों से हिन्दुओं में नव स्फूर्ति उत्सर्जित की। अपने आराध्य देवों के स्मरण में वे पुनः जुट गये। यदि मुसलमानों ने उनके देवालयों को धराशायी व मूर्तियों को खण्डित कर उनकी धार्मिक भावनाओं व आस्था को अस्थिर करने का प्रयास किया तो सन्तों ने निराकार भगवान की भक्ति का प्रसार कर सारे भारत की भूमि को पूजा स्थल में बदल दिया। भक्तों को न तो देवालयों की आवश्यकता रही और न आराध्य देवों की मूर्तियों की। इस प्रकार की अर्चना व उपासना से सन्तों ने हिन्दुओं में आध्यात्मिक भावना का भी समावेश किया। इस उपचार के साथ साथ सन्तों ने हिन्दू–मुसलमानों में समन्वयवाद की भावना का प्रचार कर उनकी साम्प्रदायिक कटुता को समाप्त करने का प्रयास किया।

भक्ति आन्दोलन के प्रवर्तक संतों ने अपना दृष्टिकोण केवल धर्म तक ही सिमित नही रखा वरन् तत्कालीन समाज पर भी दृष्टिपात किया। उन्हींनें शीघ्र ही भॉप लिया कि भारत में मुसलमानों की संख्या इतनी तीव्रता से क्यों बढ रही है ? उन्होंनें इसे रोकने हेतु दलितों को गले लगाया। सन्तों ने अपनी शिष्य मंडली में शुद्र वर्ण के लोगों को सहर्ष स्थान दिया। उनके लिए देवालयों के द्वार ही नहीं वरन् स्वर्ग के द्वार खोल दिए। भक्ति आन्दोलन में बिना किसी भेदभाव के वे भाग ले सकते थे। मुक्ति का मार्ग भक्ति निर्धारित कर मोक्ष प्राप्ति के अधिकार सभी को प्रदान कर दिए गये। जाति की दिवार को धराशायी कर दिया गया। इस प्रकार भक्ति आन्दोलन ने हिन्दू समाज में कान्तिकारी परिवर्तन कर उसे नवीन रूप प्रदान किया। याज्ञिक क्रिया–काण्डों को समाप्त कर हिन्दुओं को अच्छे कार्य करने का उपदेश दिया। समाज में मनुष्यों को आदर उनके जन्म पर न देकर उनके कर्मों के आधार पर दिया जाने लगा। स्पष्ट है कि सन्तों का यह ekuookn विचार था। इससे हिन्दू समाज में मानववाद प्रबल हुआ। समाज को सभी विषमताओं के प्रति जागरूक सन्तों से स्त्रियों की हीन अवस्था भी नहीं छुप सकी। सन्तों ने स्त्रियों को अपना शिष्य बनाकर उनका भक्ति आन्दोलन में पूर्ण सहयोग लिया। इससे भारत का नारी समाज भी अपनी प्रतिभा की अभिव्यंजना कर प्रगति के पथ पर अग्रसर हो सका।

lanHk xzUFk lwph

- परशुराम चतुर्ववेदी : हिन्दी साहित्य का वृहद् इतिहास।
- राधाकमल मुखर्जी : "ए हीस्ट्री ऑफ इंडियन शिपिंग एण्ड मोर टाईम एक्टिवीटी फ्राम द अर्लियस्ट टाईम"।
- डॉ. ताराचन्द : "इनफल्युएंस ऑफ इस्लाम आम्न इंडियन कल्चर"।
- डॉ.श्रीवास्तव एवं डॉ.चौबे : "मध्ययुगीन भारतीय समाज एवं संस्कृति।
- डॉ. युसुफ हुसैन : डपककपअंस प्दकपंद ब्नसजनतम
- डॉ. विमल चन्द पाण्डेय : "हिन्दू धर्म कोष"
- रामधारी सिंह दिनकर : संस्कृति के चार अध्याय।
- वाचस्पति गैरोला : भारतीय संस्कृति और कला।

✠ भण्डारकर : शैविज्म तथा वैष्णवणीज्मा

✠ ग्रिर्थसन : जनरल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसायटी।

✠ अब्दुल रशीद : सोसायटी एण्ड क्लचर इन मेडिवल इण्डिया।

✠ पी.डी. बड़श्वाल : निर्गुण स्कूल ऑफ हिन्दी पोयट्री।

♦❐♦